INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

गलवान घाटी संघर्ष के बाद भारत-चीन संबंधों का पुनर्मूल्यांकन

श्रीमती सीमा चौधरी

एसोसिएट प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान विभाग

वी0एम0एल0जी0कॉलेज-गाजियाबाद

Email: seemachaudhary9036@gmail.com

सारांश

भारत और चीन एशिया की दो प्रमुख शक्तियाँ हैं, जिनके बीच राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक संबंध लंबे समय से अंतरराष्ट्रीय राजनीति का महत्वपूर्ण विषय रहे हैं। दोनों देशों के संबंध सहयोग और प्रतिस्पर्धा के मिश्रण से विकसित हुए हैं, किंतु सीमा विवाद के कारण समय-समय पर तनाव भी उत्पन्न होता रहा है। वर्ष 2020 में घटित गलवान घाटी संघर्ष ने भारत-चीन संबंधों को एक नए मोड़ पर ला खड़ा किया। इस घटना ने न केवल सीमा क्षेत्र में सैन्य तनाव को बढ़ाया, बल्कि दोनों देशों के कूटनीतिक, आर्थिक और सामरिक संबंधों को भी गहराई से प्रभावित किया। इस शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य गलवान घाटी संघर्ष के बाद भारत-चीन संबंधों में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना तथा यह समझना है कि इस घटना ने क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति में किस प्रकार नई परिस्थितियाँ उत्पन्न की हैं।

यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिनमें पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी दस्तावेजों, समाचार पत्रों और अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों का उपयोग किया गया है। विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक शोध पद्धति के माध्यम से यह अध्ययन किया गया है कि संघर्ष के बाद भारत की विदेश नीति, सीमा सुरक्षा रणनीति और आर्थिक नीति में किस प्रकार परिवर्तन देखने को मिला। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि गलवान संघर्ष के बाद भारत ने अपनी सीमा सुरक्षा को मजबूत करने, सैन्य तैनाती बढ़ाने तथा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी रणनीतिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं। साथ ही, दोनों देशों के बीच विश्वास की कमी और सामरिक प्रतिस्पर्धा में वृद्धि भी देखी गई है।

अंततः यह शोध-पत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि गलवान घाटी संघर्ष ने भारत-चीन संबंधों को अधिक जटिल और संवेदनशील बना दिया है। भविष्य में दोनों देशों के संबंध कूटनीतिक वार्ता, सामरिक संतुलन और क्षेत्रीय सहयोग की दिशा में किस प्रकार विकसित होंगे, यह अंतरराष्ट्रीय राजनीति के लिए एक महत्वपूर्ण विषय बना रहेगा।

मुख्य शब्द: सीमा विवाद, विदेश नीति, सामरिक प्रतिस्पर्धा, अंतरराष्ट्रीय राजनीति, शक्ति संतुलन, क्षेत्रीय सहयोग, रणनीति

प्रस्तावना

भारत और चीन एशिया की दो प्राचीन सभ्यताएँ तथा आधुनिक विश्व की प्रमुख उभरती शक्तियाँ हैं। ऐतिहासिक रूप से दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक, धार्मिक और व्यापारिक संपर्क प्राचीन काल से विद्यमान रहे हैं। बौद्ध धर्म के प्रसार, रेशम मार्ग के व्यापार तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने इन संबंधों को सुदृढ़ किया। आधुनिक काल में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत और चीन ने मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने का प्रयास किया और पंचशील के सिद्धांतों के माध्यम से शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति को अपनाया। किंतु समय के साथ-साथ सीमा विवाद, भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और सामरिक हितों के कारण दोनों देशों के संबंधों में तनाव भी उत्पन्न हुआ। भारत-चीन संबंधों की जटिलता को समझने के लिए उनके ऐतिहासिक विकास, राजनीतिक परिस्थितियों और सुरक्षा चिंताओं का अध्ययन आवश्यक है। विद्वानों का मत है कि भारत-चीन संबंध केवल द्विपक्षीय संबंधों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इनका प्रभाव पूरे एशिया और वैश्विक राजनीति पर पड़ता है।भारत-चीन सीमा विवाद इन संबंधों में तनाव का प्रमुख कारण रहा है। हिमालयी क्षेत्र में स्थित अक्साई चिन और अरुणाचल प्रदेश जैसे क्षेत्रों को लेकर दोनों देशों के बीच लंबे समय से मतभेद बने हुए हैं। सीमा का स्पष्ट निर्धारण न होने के कारण समय-समय पर सीमा पर तनाव और सैन्य झड़पें देखने को मिली हैं। वर्ष 1962 का भारत चीन युद्ध इस विवाद का सबसे गंभीर परिणाम था, जिसने दोनों देशों के संबंधों को गहराई से प्रभावित किया। इस युद्ध के बाद सीमा विवाद और अधिक जटिल हो गया तथा दोनों देशों के बीच अविश्वास की भावना बढ़ी। विभिन्न विद्वानों ने इस बात पर बल दिया है कि सीमा विवाद केवल भूभाग का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, रणनीतिक हितों और राजनीतिक प्रतिष्ठा से भी जुड़ा हुआ है।

समकालीन समय में सीमा विवाद ने एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया, जब वर्ष 2020 में लद्दाख क्षेत्र में स्थित गलवान घाटी संघर्ष की घटना घटित हुई। इस घटना ने

भारत-चीन संबंधों को एक नए और अधिक संवेदनशील चरण में पहुँचा दिया। गलवान घाटी की घटना के बाद दोनों देशों के बीच सैन्य तैनाती में वृद्धि, कूटनीतिक वार्ताओं की श्रृंखला और आर्थिक नीतियों में परिवर्तन देखने को मिला। अनेक विश्लेषकों का मत है कि इस घटना ने भारत की सुरक्षा नीति और विदेश नीति को पुनः परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस संदर्भ में यह अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाता है कि गलवान संघर्ष के बाद भारत-चीन संबंधों में किस प्रकार परिवर्तन आया है तथा इसका क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ा है।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य गलवान घाटी संघर्ष के पश्चात भारत-चीन संबंधों में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत सीमा विवाद की पृष्ठभूमि, संघर्ष के कारणों और उसके बाद दोनों देशों की नीतियों में हुए बदलावों का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही यह भी समझने का प्रयास किया जाएगा कि इस घटना ने दक्षिण एशिया की सुरक्षा व्यवस्था, क्षेत्रीय शक्ति संतुलन और अंतरराष्ट्रीय राजनीति को किस प्रकार प्रभावित किया है। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में भारत और चीन की भूमिका निरंतर बढ़ रही है, इसलिए उनके संबंधों का अध्ययन नीति-निर्माताओं, शोधकर्ताओं और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विद्यार्थियों के लिए अत्यंत आवश्यक हो जाता है। इसी कारण यह शोध-पत्र भारत-चीन संबंधों के समकालीन स्वरूप और भविष्य की संभावनाओं को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास प्रस्तुत करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत और चीन के संबंधों का इतिहास अत्यंत प्राचीन और बहुआयामी रहा है। दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक, धार्मिक और व्यापारिक संपर्क प्राचीन काल से ही स्थापित थे। बौद्ध धर्म के प्रसार ने भारत और चीन के बीच बौद्धिक और सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ किया। भारतीय भिक्षु और विद्वान चीन गए तथा चीनी यात्रियों ने भारत की यात्रा करके यहाँ की संस्कृति, समाज और धर्म का अध्ययन किया। मध्यकाल और औपनिवेशिक काल में ये संपर्क अपेक्षाकृत कम हो गए, किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद दोनों देशों ने एक बार फिर मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। 1947 में भारत की स्वतंत्रता और 1949 में चीन में नई सरकार की स्थापना के बाद दोनों देशों ने एशिया में शांति और सहयोग को बढ़ावा देने की दिशा में कदम उठाए। उस समय भारत ने चीन के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने के लिए कूटनीतिक स्तर पर सक्रिय भूमिका निभाई। अनेक विद्वानों का मत है कि स्वतंत्रता के बाद भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य एशियाई देशों के साथ सहयोग और शांति को बढ़ावा देना था।

भारत और चीन के बीच प्रारंभिक सहयोग का सबसे महत्वपूर्ण आधार पंचशील सिद्धांत रहा। वर्ष 1954 में दोनों देशों के बीच हुए समझौते में पंचशील के पाँच सिद्धांतों को स्वीकार किया गया, जिनमें एक-दूसरे की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान, परस्पर आक्रमण न करना, एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना, समानता और पारस्परिक लाभ तथा शांतिपूर्ण सहअस्तित्व शामिल थे। इन सिद्धांतों का उद्देश्य दोनों देशों के बीच विश्वास और सहयोग को बढ़ावा देना था। उस समय भारत और चीन के बीच "हिंदी-चीनी भाई-भाई" का नारा भी लोकप्रिय हुआ, जो दोनों देशों के मैत्रीपूर्ण संबंधों का प्रतीक था। पंचशील सिद्धांतों को न केवल भारत और चीन के द्विपक्षीय संबंधों में, बल्कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भी एक महत्वपूर्ण आदर्श के रूप में देखा गया। विद्वानों के अनुसार पंचशील सिद्धांतों ने शीत युद्ध के दौर में विकासशील देशों के लिए शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का एक नया मार्ग प्रस्तुत किया।हालाँकि प्रारंभिक मैत्रीपूर्ण संबंध अधिक समय तक स्थिर नहीं रह सके। सीमा निर्धारण की अस्पष्टता और भू-राजनीतिक हितों के कारण भारत और चीन के बीच मतभेद धीरे-धीरे बढ़ने लगे। विशेष रूप से अक्साई चिन और अरुणाचल प्रदेश जैसे क्षेत्रों को लेकर दोनों देशों के बीच विवाद उत्पन्न हुआ। चीन ने अक्साई चिन क्षेत्र में सड़क निर्माण किया, जिसे भारत ने अपने क्षेत्र का उल्लंघन माना। इन घटनाओं के कारण दोनों देशों के बीच अविश्वास की स्थिति उत्पन्न हुई और सीमा पर तनाव बढ़ने लगा। इस तनाव का चरम रूप वर्ष 1962 में देखने को मिला, जब दोनों देशों के बीच भारत चीन युद्ध हुआ। यह युद्ध भारत-चीन संबंधों के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक घटना मानी जाती है। युद्ध के दौरान चीन ने अक्साई चिन क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित कर लिया और दोनों देशों के संबंधों में गहरा तनाव उत्पन्न हो गया। इस युद्ध ने भारत की सुरक्षा नीति, विदेश नीति और रक्षा व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया। अनेक विद्वानों का मत है कि 1962 का युद्ध भारत के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने देश को अपनी सैन्य क्षमता और सीमा सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिए प्रेरित किया।1962 के युद्ध के बाद भारत और चीन के संबंध लंबे समय तक तनावपूर्ण बने रहे। दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संबंध तो बने रहे, किंतु सीमा विवाद का समाधान नहीं हो सका। धीरे-धीरे दोनों देशों ने संवाद और वार्ता के माध्यम से संबंधों को सामान्य बनाने का प्रयास किया। 1980 के दशक के बाद दोनों देशों के बीच उच्च स्तरीय वार्ताओं की शुरुआत हुई और सीमा पर शांति बनाए रखने के लिए विभिन्न समझौते किए गए। इन समझौतों का उद्देश्य सीमा क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखना और सैन्य टकराव की संभावना को कम करना था।

इसके बावजूद सीमा विवाद पूरी तरह समाप्त नहीं हो सका और समय-समय पर सीमा पर तनाव की घटनाएँ सामने आती रहीं।

समकालीन समय में भारत और चीन के बीच सीमा विवाद ने एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित किया है। लद्दाख क्षेत्र में कई बार सैन्य गतिरोध की स्थिति उत्पन्न हुई, जिसने दोनों देशों के संबंधों को प्रभावित किया। इन घटनाओं से यह स्पष्ट होता है कि सीमा विवाद केवल ऐतिहासिक समस्या नहीं है, बल्कि वर्तमान अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भी इसका महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए भारत-चीन संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इसी के आधार पर वर्तमान तनाव और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण किया जा सकता है। विद्वानों का मत है कि जब तक सीमा विवाद का स्थायी समाधान नहीं होता, तब तक दोनों देशों के संबंधों में पूर्ण स्थिरता स्थापित होना कठिन रहेगा।

गलवान घाटी संघर्ष : कारण और घटनाक्रम

कुछ विद्वानों का मानना है कि गलवान घाटी संघर्ष के पीछे केवल सीमावर्ती विवाद ही नहीं, बल्कि व्यापक भू-राजनीतिक और रणनीतिक कारक भी कार्यरत थे। चीन द्वारा सीमा क्षेत्रों में अवसंरचना विकास और सामरिक विस्तार की नीति तथा भारत द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों में अपनी सैन्य क्षमता को मजबूत करने के प्रयासों ने दोनों देशों के बीच प्रतिस्पर्धा को बढ़ाया। विचारकों के अनुसार सीमा क्षेत्रों में बढ़ती सैन्य गतिविधियों और अवसंरचनात्मक विकास ने वास्तविक नियंत्रण रेखा पर तनाव को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत और चीन के बीच सीमा विवाद लंबे समय से दोनों देशों के संबंधों में तनाव का प्रमुख कारण रहा है। हिमालयी क्षेत्र में वास्तविक नियंत्रण रेखा के विभिन्न हिस्सों में समय-समय पर दोनों देशों की सेनाओं के बीच गतिरोध की स्थिति उत्पन्न होती रही है। लद्दाख क्षेत्र विशेष रूप से सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि यह भारत, चीन और मध्य एशिया के क्षेत्रों के बीच संपर्क का महत्वपूर्ण मार्ग रहा है। इसी क्षेत्र में स्थित गलवान घाटी ऐतिहासिक और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। भारत और चीन के बीच सीमा निर्धारण स्पष्ट न होने के कारण यहाँ कई बार तनाव की स्थिति बनी रही है। अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विद्वानों के अनुसार भारत-चीन सीमा विवाद केवल भू-भाग का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, रणनीतिक हितों और राजनीतिक प्रतिष्ठा से भी जुड़ा हुआ है। गलवान घाटी संघर्ष की पृष्ठभूमि में कई ऐसे कारक थे, जिन्होंने दोनों देशों के बीच तनाव को बढ़ाया। लद्दाख क्षेत्र में अवसंरचना निर्माण, विशेष रूप से सड़कों और सैन्य सुविधाओं के विकास ने सीमा क्षेत्र में सामरिक प्रतिस्पर्धा को बढ़ा दिया। भारत द्वारा सीमा क्षेत्रों

में सड़क निर्माण और सैन्य तैनाती को मजबूत करने के प्रयासों को चीन ने अपने हितों के लिए चुनौती के रूप में देखा। इसके अतिरिक्त वास्तविक नियंत्रण रेखा की भिन्न-भिन्न व्याख्याएँ भी विवाद का महत्वपूर्ण कारण रही हैं। दोनों देशों के बीच सीमा की स्पष्ट रेखा निर्धारित न होने के कारण कई स्थानों पर गश्त के दौरान आमना-सामना होने की घटनाएँ बढ़ने लगीं। विद्वानों का मत है कि सीमा क्षेत्रों में अवसंरचना विकास और सामरिक प्रतिस्पर्धा ने दोनों देशों के बीच अविश्वास को और गहरा कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप तनाव की स्थिति उत्पन्न हुई। इन्हीं परिस्थितियों के बीच वर्ष 2020 में लद्दाख क्षेत्र की गलवान घाटी में भारत और चीन की सेनाओं के बीच गंभीर झड़प हुई, जिसे गलवान घाटी संघर्ष के नाम से जाना जाता है। यह घटना भारत-चीन संबंधों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखी जाती है। जून 2020 में दोनों देशों की सेनाओं के बीच वास्तविक नियंत्रण रेखा के निकट टकराव हुआ, जिसमें दोनों पक्षों के सैनिकों को क्षति पहुँची। यह घटना विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण थी क्योंकि कई दशकों बाद सीमा क्षेत्र में इतनी गंभीर झड़प देखने को मिली थी। इस घटना के बाद दोनों देशों के बीच कूटनीतिक और सैन्य स्तर पर व्यापक चर्चा और वार्ताएँ शुरू हुईं। दोनों पक्षों ने तनाव को कम करने के लिए कई दौर की वार्ताएँ कीं और सीमा क्षेत्र में स्थिति को सामान्य बनाने के प्रयास किए।

इस संघर्ष के बाद भारत और चीन की प्रतिक्रियाएँ भी महत्वपूर्ण रहीं। भारत ने सीमा क्षेत्रों में अपनी सैन्य तैनाती को मजबूत किया तथा अवसंरचना विकास को और गति दी। इसके साथ ही भारत ने अपनी विदेश नीति में भी अधिक सतर्क और रणनीतिक दृष्टिकोण अपनाया। दूसरी ओर चीन ने भी सीमा क्षेत्रों में अपनी सैन्य उपस्थिति बनाए रखी और वार्ताओं के माध्यम से स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास किया। कई विशेषज्ञों का मत है कि गलवान घाटी की घटना ने भारत-चीन संबंधों में विश्वास की कमी को और अधिक बढ़ा दिया तथा दोनों देशों के बीच सामरिक प्रतिस्पर्धा को तीव्र कर दिया। इस घटना के बाद भारत और चीन के संबंधों में एक नया चरण प्रारंभ हुआ, जिसमें कूटनीतिक संवाद, सैन्य सतर्कता और रणनीतिक संतुलन प्रमुख तत्व बन गए।

गलवान संघर्ष के बाद भारत-चीन संबंधों में परिवर्तन

वर्ष 2020 में लद्दाख क्षेत्र में घटित गलवान घाटी संघर्ष भारत-चीन संबंधों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में सामने आया। इस संघर्ष ने दोनों देशों के बीच पहले से मौजूद अविश्वास को और गहरा कर दिया तथा द्विपक्षीय संबंधों के विभिन्न आयामों–कूटनीतिक, सैन्य, आर्थिक और रणनीतिक–पर व्यापक प्रभाव डाला। गलवान घाटी की घटना के बाद भारत और चीन

के संबंधों में जो परिवर्तन देखने को मिले, वे केवल सीमा क्षेत्र तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति को भी प्रभावित किया। इस घटना के बाद दोनों देशों के बीच संवाद और सहयोग की प्रक्रिया अधिक जटिल हो गई और संबंधों में सतर्कता तथा प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति बढ़ने लगी। कूटनीतिक संबंधों के स्तर पर गलवान संघर्ष के बाद भारत और चीन के बीच कई दौर की वार्ताएँ आयोजित की गईं। दोनों देशों ने तनाव को कम करने और सीमा क्षेत्र में शांति स्थापित करने के लिए सैन्य और कूटनीतिक वार्ताओं का सहारा लिया। हालांकि इन वार्ताओं के माध्यम से कुछ क्षेत्रों में स्थिति को नियंत्रित करने के प्रयास किए गए, फिर भी दोनों देशों के बीच विश्वास की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी। भारत ने अपनी विदेश नीति में अधिक संतुलित और रणनीतिक दृष्टिकोण अपनाते हुए विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी स्थिति को मजबूत करने का प्रयास किया। इसके साथ ही भारत ने अपने पारंपरिक और नए सहयोगियों के साथ संबंधों को भी सुदृढ़ किया, जिससे क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने में सहायता मिल सके। विद्वानों का मत है कि गलवान संघर्ष के बाद भारत की कूटनीतिक नीति अधिक सक्रिय और बहुआयामी हो गई है, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता को सुनिश्चित करना है।गलवान घाटी की घटना के बाद भारत ने अपनी विदेश नीति और सामरिक दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। भारत ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में अपनी भूमिका को अधिक सक्रिय बनाने तथा समान विचारधारा वाले देशों के साथ सहयोग को बढ़ाने पर बल दिया। इस संदर्भ में विशेषज्ञों का मत है कि इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भारत की सक्रियता केवल क्षेत्रीय सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक शक्ति संतुलन को भी प्रभावित करती है।

सैन्य और सुरक्षा रणनीति के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले। गलवान घाटी की घटना ने यह स्पष्ट कर दिया कि सीमा क्षेत्रों में सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। इसके परिणामस्वरूप भारत ने लद्दाख और अन्य सीमावर्ती क्षेत्रों में सैन्य तैनाती को मजबूत किया तथा आधुनिक सैन्य उपकरणों और अवसंरचना के विकास पर विशेष ध्यान दिया। सड़क, पुल और हवाई पट्टियों के निर्माण के माध्यम से सीमा क्षेत्रों में सामरिक क्षमता को बढ़ाने के प्रयास किए गए। इसके साथ ही भारतीय सेना ने पर्वतीय युद्ध क्षमता को बढ़ाने और आधुनिक तकनीक के उपयोग पर भी जोर दिया। दूसरी ओर चीन ने भी सीमा क्षेत्रों में अपनी सैन्य उपस्थिति को बनाए रखा और रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपनी गतिविधियों को जारी रखा। विशेषज्ञों के अनुसार गलवान संघर्ष के बाद भारत और चीन के बीच सामरिक प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति अधिक स्पष्ट रूप से सामने आई है, जिससे दोनों देशों की

सुरक्षा नीतियों में दीर्घकालिक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। आर्थिक और व्यापारिक संबंधों पर भी इस संघर्ष का प्रभाव पड़ा। भारत और चीन के बीच व्यापारिक संबंध लंबे समय से महत्वपूर्ण रहे हैं, किंतु गलवान घटना के बाद भारत ने चीन पर अपनी आर्थिक निर्भरता को कम करने की दिशा में कदम उठाए। भारत सरकार ने कई चीनी निवेश परियोजनाओं की समीक्षा की और तकनीकी तथा डिजिटल क्षेत्र में भी नए नियम लागू किए। इसके अतिरिक्त भारत ने घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहित करने और आत्मनिर्भरता की नीति को बढ़ावा देने पर भी बल दिया। हालांकि दोनों देशों के बीच व्यापार पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ, लेकिन आर्थिक संबंधों में सावधानी और संतुलन की प्रवृत्ति बढ़ गई। कई विद्वानों का मत है कि आर्थिक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा और सहयोग दोनों की स्थिति बनी रही, किंतु रणनीतिक दृष्टिकोण से भारत ने अपनी आर्थिक नीतियों में परिवर्तन करना आवश्यक समझा।

क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति पर प्रभाव

गलवान घाटी संघर्ष ने एशिया की भू-राजनीतिक परिस्थितियों को भी प्रभावित किया। कई विद्वानों का मत है कि चीन की बढ़ती रणनीतिक गतिविधियों के कारण एशिया में शक्ति संतुलन का प्रश्न और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। चीन की क्षेत्रीय रणनीति और सैन्य विस्तार ने एशिया में कई देशों की सुरक्षा चिंताओं को बढ़ाया है, जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय सहयोग और सामरिक साझेदारी की आवश्यकता बढ़ी है। गलवान संघर्ष का प्रभाव केवल भारत और चीन के द्विपक्षीय संबंधों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसका प्रभाव व्यापक क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति पर भी पड़ा। दक्षिण एशिया की सुरक्षा व्यवस्था में भारत और चीन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसलिए इन दोनों देशों के बीच तनाव का प्रभाव पूरे क्षेत्र पर पड़ता है। गलवान घटना के बाद दक्षिण एशिया में शक्ति संतुलन और सुरक्षा व्यवस्था के प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण हो गए। भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ सहयोग को बढ़ाने तथा क्षेत्रीय स्थिरता को बनाए रखने के लिए विभिन्न कूटनीतिक पहलें कीं। इसके साथ ही क्षेत्रीय संगठनों और बहुपक्षीय मंचों पर भी भारत की सक्रियता बढ़ी। विशेषज्ञों के अनुसार भारत-चीन तनाव ने दक्षिण एशिया में सुरक्षा चिंताओं को बढ़ाया और क्षेत्रीय सहयोग की आवश्यकता को और अधिक स्पष्ट किया। इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भी इस संघर्ष का महत्वपूर्ण प्रभाव देखने को मिला। यह क्षेत्र वर्तमान वैश्विक राजनीति में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि यहाँ कई प्रमुख शक्तियों के रणनीतिक हित जुड़े हुए हैं। गलवान संघर्ष के बाद भारत ने इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में अपनी भूमिका को अधिक सक्रिय बनाने का प्रयास किया। भारत ने समुद्री सुरक्षा, व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के

लिए विभिन्न देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत किया। इस संदर्भ में भारत ने समान विचारधारा वाले देशों के साथ सहयोग को बढ़ाया और क्षेत्रीय स्थिरता को बनाए रखने के लिए सामरिक साझेदारी को महत्व दिया। विद्वानों का मत है कि इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने वैश्विक शक्ति संतुलन को प्रभावित किया है और भारत की भूमिका इस क्षेत्र में और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

अंतरराष्ट्रीय शक्तियों की भूमिका भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण रही है। भारत और चीन के बीच तनाव ने वैश्विक शक्तियों का ध्यान आकर्षित किया और कई देशों ने क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया। कुछ देशों ने कूटनीतिक स्तर पर संवाद और सहयोग को बढ़ावा देने की बात कही, जबकि अन्य देशों ने क्षेत्रीय सुरक्षा के प्रश्नों पर अपनी रणनीतिक नीतियों को पुनः निर्धारित किया। वैश्विक राजनीति में भारत और चीन दोनों ही महत्वपूर्ण शक्तियाँ हैं, इसलिए उनके संबंधों का प्रभाव अंतरराष्ट्रीय शक्ति संतुलन पर भी पड़ता है। विशेषज्ञों का मत है कि गलवान संघर्ष ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एशिया की भूमिका को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है तथा इससे वैश्विक कूटनीतिक और सामरिक समीकरणों में भी परिवर्तन देखने को मिला है।समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भारत और चीन के संबंधों का प्रभाव केवल द्विपक्षीय स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका व्यापक प्रभाव वैश्विक शक्ति संतुलन पर भी पड़ता है। वर्तमान समय में भारत-चीन संबंध प्रतिस्पर्धा और सहयोग के जटिल स्वरूप को दर्शाते हैं, जहाँ दोनों देश अपने-अपने रणनीतिक हितों की रक्षा करने के लिए विभिन्न नीतिगत कदम उठा रहे हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि गलवान घाटी संघर्ष केवल एक घटनामात्रनहीं था, बल्कि उसने भारत-चीन संबंधों, दक्षिण एशिया की सुरक्षा व्यवस्था, इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की रणनीतिक प्रतिस्पर्धा तथा वैश्विक राजनीति के व्यापक संदर्भों को प्रभावित किया। आने वाले समय में इन प्रभावों का अध्ययन और विश्लेषण अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बना रहेगा।

निष्कर्ष

भारत और चीन एशिया की दो प्रमुख शक्तियाँ हैं जिनके संबंध ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं। दोनों देशों के बीच सहयोग और प्रतिस्पर्धा की मिश्रित स्थिति लंबे समय से बनी हुई है। ऐतिहासिक रूप से सांस्कृतिक और व्यापारिक संपर्कों ने दोनों देशों को एक-दूसरे के निकट लाने का कार्य किया, किंतु सीमा विवाद और भू-राजनीतिक

हितों के कारण समय-समय पर संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होता रहा। विशेष रूप से भारत चीन युद्ध के बाद भारत-चीन संबंधों में अविश्वास की भावना बढ़ी, जिसके प्रभाव आज भी विभिन्न रूपों में दिखाई देते हैं। इसके बावजूद दोनों देशों ने कई बार कूटनीतिक वार्ताओं और समझौतों के माध्यम से संबंधों को संतुलित बनाए रखने का प्रयास किया है। वर्ष 2020 में लद्दाख क्षेत्र में घटित गलवान घाटी संषर्घ ने भारत-चीन संबंधों को एक नए और अधिक संवेदनशील चरण में पहुँचा दिया। इस घटना ने यह स्पष्ट कर दिया कि सीमा विवाद अभी भी दोनों देशों के संबंधों में सबसे महत्वपूर्ण और जटिल समस्या बना हुआ है। गलवान घाटी की घटना के बाद दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संवाद और सैन्य सतर्कता में वृद्धि हुई, साथ ही आर्थिक और रणनीतिक नीतियों में भी परिवर्तन देखने को मिला। भारत ने अपनी सीमा सुरक्षा को मजबूत करने, अवसंरचना विकास को बढ़ाने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी रणनीतिक स्थिति को सुदृढ़ करने की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए। दूसरी ओर चीन ने भी सीमा क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति बनाए रखी और वार्ताओं के माध्यम से स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास किया।

समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि गलवानघाटी संघर्ष ने भारत-चीन संबंधों को अधिक जटिल और संवेदनशील बना दिया है। भविष्य में दोनों देशों के संबंध इस बात पर निर्भर करेंगे कि वे सीमा विवाद के समाधान, पारस्परिक विश्वास की पुनर्स्थापना और कूटनीतिक संवाद को किस प्रकार आगे बढ़ाते हैं। यदि दोनों देश सहयोग, संवाद और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धांतों को अपनाते हैं, तो क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक संतुलन को बनाए रखना संभव हो सकता है। इसलिए भारत-चीन संबंधों का संतुलित और विवेकपूर्ण प्रबंधन न केवल दोनों देशों के लिए, बल्कि पूरे एशिया और विश्व की शांति और स्थिरता के लिए **भी अत्यंत आवश्यक है।**

सन्दर्भ सूची

1. पंत, पुष्पेश, भारतीय विदेश नीति, मैकग्रा हिल एजुकेशन, नई दिल्ली, 2016
2. कौल, टी. एन., भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1992
3. राजा मोहन, सी., समुद्र मंथन: हिंद महासागर में भारत की भूमिका, हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2013
4. दीक्षित, जे. एन., भारत की विदेश नीति और उसका विकास, पियरसन एजुकेशन, नई दिल्ली, 2011

5. सिंह, स्वर्ण, भारत-चीन सीमा विवाद और समकालीन एशियाई राजनीति, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2022
6. चेलानी, ब्रह्म, एशियाई भू-राजनीति और चीन की रणनीति, हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2022
7. कुमार, अमित, भारत-चीन संबंध और वैश्विक शक्ति संतुलन, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2022
8. सिंह दीप्ति, जून, 2020 **Road to Galwan** नॉशन प्रेस, दिल्ली, 2021
9. शाही आकृति-गलवान एक अनसुनी कहानी, नॉशन प्रेस, दिल्ली, 2020

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA



Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM